क्या बल केहेसी कायर माया को, जो गए सागर में रल।
सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल।। १३ ।।

वह कायर जो माया में मग्न होंगे, वह माया की शक्ति का क्या बखान करेंगे? जो माया की रीतियों को उलटकर धनी की तरफ चलेगा तो वही माया की शक्ति को बताएगा।

दे साख धनिऐं जगाइया, दई बिध बिध की सुध।
भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध।। १४ ।।

धनी ने कई प्रकार की गवाहियां देकर जगाया। तरह-तरह के अखण्ड परमधाम के निशान बताए, फिर भी परमधाम की पहचान नहीं हुई।

महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो धाम के सुन्दरसाथ हों, वह इन शब्दों को पहचानकर अखण्ड सुख का लाभ ले सको तो ले लेना नहीं तो दुबारा ऐसा मौका हाथ नहीं आएगा।

॥ प्रकरण ॥ ७७ ॥ चौपाई ॥ १०५१ ॥

राग श्री

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।। १ ।।

हे साथजी! ऐसे अखण्ड सुखों को पहचानकर क्यों गंवाते हो? इस ब्रह्माण्ड के सुख झूठे हैं। ऐसा समझकर भी भूलने की गलती क्यों करते हो?

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान।। २ ।।

करोड़ों बैकुण्ठों के राज्य के सुख परमधाम के सुखों के सामने यहां के एक क्षण के समान भी नहीं हैं, इसलिए जान बूझकर अपने जन्म को व्यर्थ में क्यों गवां रहे हो? इसलिए हे साथजी! तुम समझदार हो। सावचेत (सावधान) हो जाओ।

एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़।। ३ ।।

लाखों-करोड़ों और पदमों मोहरें खर्च करने पर तथा सिर कटवा देने पर भी एक क्षण की आयु नहीं मिलेगी। इस समय का एक पल भी बड़ा कीमती है और इसकी बराबरी में कुछ भी नहीं है।

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसो भई ना रंग रस।। ४ ।।

जब एक पल की कीमत नहीं हो सकती, तो दिन, महीना और वर्ष की कीमत कैसे कहूं? तुमने झूठी माया के सुखों में जन्म गवां दिया है और धनी की पहचान कर उनका आनन्द नहीं लिया।

Nijanand App

काहूं बदले न पाइए, कई दौड़त मुझ देखत।
पर रास न आया किनको, जो लों धनी नहीं बकसत।। ५ ।।

दुनियां की कोई भी चीज देने पर वह अखण्ड सुख नहीं मिल सकता। बहुतेरे मुझे देखकर नकल करते हैं (और ऊपरी रूप धारण कर श्री प्राणनाथजी बनना चाहते हैं), परन्तु ऊपरी दिखावा करके किसी को वह सुख नहीं मिला, क्योंकि यह तो बख्शीश होती है। धनी कृपा कर के दें तो ही मिलता है।

सुख अखण्ड अछरातीत को, इन समें पाइयत हैं इत।
कहा कहूं कुकरम तिनके, जो माहें रेहे के खोवत।। ६ ।।

अक्षरातीत धाम धनी के अखण्ड सुख यहां मिल रहे हैं, पर क्या कहूं उन सुन्दरसाथ को जो साथ में रहकर भी कुकर्म करते हैं और अखण्ड सुख गंवाते हैं।

कैयों खोया जनम अपना, रहे धनी के जमाने माहें।
हाए हाए कहा कहूं मैं तिनको, जो इनमें से निरफल जाए।। ७ ।।

कईयों ने श्री प्राणनाथजी के साथ रहकर भी अपना जन्म गंवा दिया। ऐसे सुन्दरसाथ को मैं क्या कहूं जो ऐसे समय में भी निष्फल चले जाएं और धनी का सुख न पा सकें।

कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पिउ का समया पाए।
सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढ़ाए।। ८ ।।

कईयों ने श्री प्राणनाथजी को धाम का धनी पहचान कर तथा उनके हुकम को सिर चढ़ाकर जन्म भर सेवा करके अपना जन्म स्फल किया।

एक साइत वृथा न गई, धनी किए सनकूल।
चले चित्त पर होए आधीन, परी ना कबहूं भूल।। ९ ।।

उन्होंने एक पल भी व्यर्थ न गंवाकर धनी की सेवा करके सदा खुश किया और सदा धनी की इच्छानुसार चले। उनसे कभी सेवा में भूल नहीं हुई।

सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी कहें धंन धंन।
साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन।। १० ।।

ऐसे सुन्दरसाथ यहां भी धन्य-धन्य हुए और परमधाम में श्री राजजी महाराज भी उनको धन्य-धन्य कहेंगे। वह सुन्दरसाथ में भी यहां धन्य-धन्य हुए और इनका सारा जीवन भी रात-दिन धन्य-धन्य हो गया।

कई छिपे रहे मांहें दुस्मन, और मारें राह औरन।
चाल उलटी चल देखावहीं, तो भी धनी न तजें तिन।। ११ ।।

कई सुन्दरसाथ में रहकर भी दिल के कपटी थे और दूसरों के भी ईमान को गिराते थे तथा उलटी चाल चलते थे। फिर भी धनी तो मेहरबान हैं। उनको भी नहीं छोड़ते।

दृष्ट उपली सजन हो रहे, बोल देखावें मीठे बैन।
जनम सारा धनी संग रहे, कबूं दिल न दिया सुख चैन।। १२ ।।

ऊपर के दिखावे में वह हितैषी बने रहे और मीठे-मीठे वचन बोलते रहे। सारा जन्म धनी के साथ में रहे, परन्तु कभी भी दिल में भाव नहीं लाए और सुख प्राप्त नहीं किया।

Nijanand App

इन बिध कई रंग साथ में, यों बीते कई बीतक।
सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक।। १३ ।।

सुन्दरसाथ के बीच में तरह-तरह की भावना के लोग थे। ऐसी कई घटनाएं घटीं। धनी की मेहर तो सब पर एक जैसी ही थी, पर सबको फल अपनी करनी के माफिक मिला।

दुख माया धनीपें मांग के, हम आए जिमी इन।
सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन।। १४ ।।

हम परमधाम में धनी से दुःख मांगकर इस संसार में आए हैं, इसलिए यह माया अपना रूप दिखा रही है, परन्तु जो सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि है वह कभी नहीं भूलती।

और भी देखो विचार के, तो हुकमें सब कछू होए।
बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए।। १५ ।।

यदि और भी विचार कर देखो तो हुकम से ही सब कुछ होता है। बिना हुकम के कोई भी काम नहीं होता। हार-जीत दोनों हुकम से होती हैं।

महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल।
जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी से हमने यह माया का खेल मांगकर लिया है। जो सदा धनी के सम्मुख रहेगा उसको ही माया की शक्ति का अनुभव होगा (क्योंकि धनी के सामने रहना माया से उल्टा चलना है जिसमें लाख मुसीबतें आती हैं) और दूसरों को भी माया का बल बताकर सावचेत करेगा।

।। प्रकरण ।। ७८ ।। १०६७ ।।

राग श्री मारू

साथ जी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस वाणी को पहचानो। यह वाणी अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश करती है। यह तुम्हारे वास्ते ही आई है। अपनी निज नजर को खोलकर देखो।

त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध मांहें।
कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी तांहें।। २ ।।

इस दुनियां में तीन तरह की सृष्टियां तीन ठिकाने की हैं। यह चाल भी तीन तरह की चलती हैं। इनमें कोई भी अपने अंकुर को नहीं छोड़ रही हैं। यह अपनी असलियत के अनुसार करनी कर रही हैं।

सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह धर।
ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा इमामें आखिर।। ३ ।।

तीनों ठिकानों की सुरताओं ने यहां आकर तन धारण किए हैं। यह तीनों सृष्टियां मृत्यु लोक में हैं। इनकी हकीकत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने आखिरत में आकर बताई हैं।

इन बिध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान।
तीन सृष्ट आई जुदी जुदी, पोहोंचे अपने ठौर निदान।। ४ ।।

शास्त्रों में इस तरह से जाहिर करके लिखा है कि तीन प्रकार की सृष्टियां तीन ठिकाने से आईं और अपने-अपने ठिकाने जाएंगी।

Nijanand App